निबन्धात्मक लेख*

जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशालाओं को कैसे सुचारू एवं सारगर्भित रूप से चलाया जाये

✍✍✍✍ 🖊️🖋️अर्पित शास्त्री 'भगवां'

🔅1.) प्रस्तावना:- हम एजुकेशन को लेकर गंभीर ज़रूर हैं। हम हर गांव में पाठशाला खोल रहे हैं लेकिन इतना काफी नहीं। इसकी भी जवाबदेही तय होनी चाहिए कि हमारी पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चों को स्तरीय शिक्षा मिले। हमारा जोर पढ़ाने से ज़्यादा सिखाने पर होना चाहिए| 'विदआउट एजुकेशन सोसाइटी इज़ ब्लाइंड'। सच कहूं तो अक्सर मुझे ये देखकर दुख होता है कि हमारे धर्म में पाठशाला से ज़्यादा मंदिर हैं। धर्म भी ज़रूरी है लेकिन शिक्षा के बिना धर्म हमें अंधविश्वास की ओर ले जाता है। वह हमें लाचार बनाता है और कई मामलों में तो हिंसा पर भी उतारू कर देता है, इसलिए पहले अध्ययन करना जरूरी है, जिससे हम पग - पग पर नहीं ठगे जाए | इसके लिए हमें अपने जैनधर्म का अध्ययन करने के लिए जैनधर्म की पाठशालाओं में अपने बच्चों के साथ स्वयं भी जाना होगा और दूसरों को प्रेरित भी करना होगा जिससे अन्य जन भी इसका लाभ ले सकें |इसके लिए हमें अपने गाँवों में चल रही पाठशालाओं को सुचारू एवं सारगर्भित रूप से चलाना होगा, पाठशालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करना होगा, जिससे विद्यार्थी पाठशाला में अध्ययन करने के लिए और भी उत्साहित हों, अतः हमें अपने जिनधर्म की प्रभावना हेतु पाठशालाओं को सुचारू एवं सारगर्भित रूप से चलाना चाहिए......

🔅2.) पाठशाला का उद्देश्य:- पाठशाला का उद्देश्य एकमात्र तत्वप्रचार व तत्वविचार रहना चाहिए तभी पाठशालाओं के माध्यम से जिनशासन की प्रभावना हो सकेगी | हमें अपने धर्म की प्रत्येक गतिविधियों में पाठशाला में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतियां देनी होगी क्योंकि आधुनिक काल में लोगों को प्रस्तुतियां ही प्रभावित करती हैं, जिससे प्रभावना भी विशेष होती है | पंचकल्याणकों जैसे महान-महान उत्सवों में हजारों की तादात में भक्तगण उपस्थित होते हैं, वहाँ यदि लोगों को पाठशाला का महत्व, पाठशाला के फायदे इत्यादि विषय पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा ही प्रस्तुतिकरण के रूप में प्रस्तुत किए जायेंगे तो बच्चों के माता-पिता तथा स्वयं बच्चे भी उससे प्रभावित होंगे तथा बच्चे पाठशाला में अध्ययन में भी रुचि दिखावेंगे, जिससे हमारे जिनशासन की और अधिक प्रभावना होगी | पाठशाला के इस (तत्वप्रचार और तत्वविचार) उद्देश्य को उद्देश्य तक पहुंचाना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए तभी हमारा उद्देश्य सार्थक व सफल होगा.....

🔅3.) पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं:- 👨‍🏫👨‍🏫👨‍💼👩‍🏫👩‍🏫हमारे जीवन के निर्माण में अध्यापक की एक अहम भूमिका होती है, क्योंकि ये समाज उन्हीं बच्चों से बनता है जिनकी प्राथमिक शिक्षा का जिम्मा एक अध्यापक पर होता है| ये अध्यापक ही हैं जो विद्यार्थी को समाज में एक अच्छा इंसान बनाने के साथ उसका सर्वोत्तम विकास भी करते हैं |

🔵 👨‍💼👨‍🏫👨‍🏫👨‍💼 "अक्सर वह अध्यापक पसंद किए जाते हैं जो अपने विद्यार्थियों👫👫 को अपना दृष्टिकोण रखने की स्वतंत्रता देते हैं |"

🔵 'आचार्य कल्प पंडित टोडरमल जी' ने मोक्षमार्ग प्रकाशक के प्रथम अध्याय में जो वक्ता के स्वरूप का वर्णन किया है, उसमें जो-जो वक्ता के लक्षण बताये हैं, एक अध्यापक में वह सभी विशेषताएं होनी चाहिए |

🔵 अध्यापक को इसतरह का अपना अध्यापन कार्य प्रस्तुत करना चाहिए कि बच्चे वापस घर जाने की जिद ना करें और अगले दिन भी पाठशाला में उत्साहित होकर आयें |

🔵 अध्यापक को प्रशिक्षित अवश्य होना चाहिए तथा जो विषय उसे पढ़ाना है उसे सुदृढ़ तरीके से पढ़कर आना चाहिए |

🔅4.) जैन पाठशाला क्यों आवश्यक है ? :-निर्णय आप स्वयं ही करें! पुण्य कर्म का उदय कहो या हमारे जो बड़े बुजुर्ग हैं उनका उपकार | आज लगभग सब जगह पर जिनेन्द्र देव के दर्शन सुलभ हैं सभी क्षेत्रों में, गाँवों में जैन मंदिर उपलब्ध हैं | वो बात और है कि ज्यादातर लोग फिर भी नित्य देवदर्शन तक नहीं करते |
आप हंस रहे हैं! कहीं आप भी उनमें शामिल तो नहीं??? दोष उनका नहीं है, शायद उनको जैन पाठशाला जाने का सौभाग्य नहीं मिला हो तो उन्हें अपने महान धर्म का महत्व ही नहीं पता चल पाया | देखिए महानुभावों! आप बड़ा - सा विद्यालय बना दीजिये पर जैसे स्कूल का महत्व विद्यार्थियों और शिक्षकों के बिना और अस्पताल का डॉ.के बिना कोई महत्त्व नहीं है ,चाहे भवन फिर कितना भी भव्य हो ठीक उसी तरह हम बड़े - बड़े मंदिर तो बहुत बना रहे हैं, बनाने भी चाहिए पर अगर जैन शिक्षा पर जोर नहीं दिया तो वो समय भी दूर नहीं जब मंदिर तो होंगे पर भक्त गायब हो जायेंगे
बच्चो को पाठशाला अवश्य भेजें ,क्योंकि ये भविष्य के लिए अति आवश्यक है ||| " मैं इमारतें तो बनाता गया सीढीया बनाना भूल गया ,मैंने मंजिले तो तय कर दी पर राह बताना भूल गया ,जिनेन्द्र देव को मंदिर जी में तो धूम-धाम से विराजमान कर दिया पर उन जैसा कैसा बनें वो संस्कार देना भूल गया....."

🔅5.) पाठशाला खोलो अभियान :- इस समय पाठशाला खोलो अभियान प्रकृति पर है , यह अभियान स्वतंत्र रूप से चल रहा है | इसका उद्देश्य पूरे भारतवर्ष की पाठशालाओं के अध्यापकों को एक जगह एकत्रित करना है | हमें ऐसा इसलिए करना चाहिए ताकि सभी अध्यापक एक-दूसरे से अपने विचार, अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम और गतिविधियां बांट सकें | इससे दो फायदे होंगे पहला आपकी पाठशाला की प्रभावना होगी और दूसरा औरों को नये सुक्षाव मिलेंगे और पूरे देश की पाठशालाओं की जानकारी हमें प्राप्त होती रहेगी | इससे सभी जैन पाठशालाओं का प्रचार-प्रसार होगा , लोगों को पाठशालाओं की महिमा आयेगी और अपने बच्चों को पाठशाला भेजने की प्रेरणा मिलेगी | अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे गलत संगति से बचे रहें तो आपको बच्चों के लिए पाठशाला भेजना होगा | हमें भारतवर्ष की समस्त पाठशालाओं की जानकारी रखनी चाहिए, हमें पूरे भारत की पाठशालाओं का एक जगह कार्यालय बनाना होगा जिससे किसी को भी पाठशाला से संबंधित कोई समस्या है, कोई सुक्षाव है तो वह वहाँ प्रेषित कर सकें | पाठशालाओं को खुलवाने का हमें भरपूर प्रयास करना चाहिए और जो पाठशालाएँ चल रही हैं उन्हें सुचारू रूप से चलाना चाहिए, क्योंकि
“संस्कार बहुत ज़रुरी है ।
बाकी सब मज़बूरी है । ”......

🔅6.) सही मार्ग चुनें आत्म - उत्थान के लिए :-इस दुनिया में हर कोई अपनी-अपनी लड़ाई लड़ रहा है। हर कोई भाग रहा है, कुछ बनने के लिए। हर कोई अपनी तरह से मेहनत कर रहा है, ताकि वह अपना फ़्यूचर सिक्योर (भविष्य निश्चित) कर सके | लोग सोचते हैं कि अगर हमें अपनी मंजिल पानी है तो यह नहीं देखना चाहिए कि हम बुरे रास्ते पर चलकर मंजिल प्राप्त करने में लगे हैं कि अच्छे रास्ते में, लोगों की ऐसी धारणा बन गयी है कि मंजिल जिसप्रकार से भी मिले हमें उसे प्राप्त करना है | ऐसे में हम अपनी मंजिल को भले ही प्राप्त करलें लेकिन जीवन में कभी-भी हम उत्थान को प्राप्त नहीं कर सकते, अगर हमें अपना उत्थान करना है तो हमें ऐसी शिक्षा प्राप्त करनी होगी जो हमें पतित से पावन बनाएं और ऐसी शिक्षा हमें केवल पाठशाला से ही प्राप्त हो सकती है, अतः हमें स्वयं पाठशाला में अध्ययन अवश्य करना चाहिए तथा औरों को भी पाठशाला भेजने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए.........

🔅7.) वर्तमान समय अनुसार, किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए ? :- शिक्षा ही सफलता की नींव है| जिसतरह पाठशाला में सिखाई गयी बातें जितनी महत्वपूर्ण होती हैं उसीतरह विवेक, समझ के साथ बोलने की कला भी महत्वपूर्ण होती है, अत: हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम बच्चों को पढ़ाने के बाद विषय का भावार्थ उनसे पूछें और अन्य बच्चों को भावार्थ समझाने के लिए कहें, जिससे उनका विषय भी दृढ़ होगा और वह बोलने की कला भी सीखेंगे| हमें बच्चों की शिक्षा को सही दिशा देने के लिए नये तरीकों की खोज करनी होगी|
🔅बच्चों को इसप्रकार (इस पद्धति से ,इन तरीकों से)पढ़ाना चाहिए.....

👉👉👉1️⃣ बच्चों में जैन धर्म का अध्ययन करने की रुचि पैदा करनी चाहिए | जैसे :- रोचकता उत्पन्न करने वाली कहानियाँ सुनाना, प्रतियोगिता कराना, समय-समय पर महामुनियों, महापुरुषों की प्रस्तुतियां करवाना आदि .....
👉👉👉2️⃣ बच्चों के दिमाग की कसरत करानी चाहिए , हमें बच्चों के सामने ऐसे प्रश्न उपस्थित करने चाहिए जिनसे बच्चों को ज्यादा चिंतन, विचार करना पढ़े, क्योंकि जिसप्रकार शरीर की ज्यादा कसरत से तंदुरुस्त हो सकते हैं उसीप्रकार दिमाग की ज्यादा कसरत से विद्वान भी बन सकते हैं.....
👉👉👉3️⃣ यह टेकनोलोजी का युग आ चुका है, इससमय पाठशालाओं में प्रोजेक्टर की सुविधा तो हो ही सकती है तो हमें प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाने का प्रयास करना चाहिए.....
👉👉👉4️⃣ हमें बच्चों को प्रेक्टिकली पढ़ाना चाहिए, हो सके तो हमें अपनी पाठशाला में एक लैब बनवाने का भी प्रयास करना चाहिए, जिससे बच्चों को विषय समझने में आसानी हो.....
👉👉👉5️⃣ प्रतिदिन बच्चों को पढ़ाते वक्त हमें बच्चों को सचेत करना चाहिए कि आपको भी ऐसे ही व्यवहार करना चाहिए, ऐसा ही कार्य करना चाहिए, बच्चों को पुण्य-पाप का फल बताकर अच्छे कार्यों में प्रवृत्ति तथा बुरे कार्यों से निवृत्ति करानी चाहिए.....

🔅8.) उपसंहार :- बच्चे सालों तक दकियानूसी शिक्षा पद्धति में अपना समय गुजारते हैं और ऐसे विषय पढ़ते हैं जो उनके जीवन में कभी-भी, कहीं-भी काम नहीं आने वाले हैं और वे ऐसी दुनिया के लिए तैयारी करते हैं जिसका अब नामोनिशान भी नहीं बचा है | आधुनिक काल में बच्चों के अभिभावक बच्चों को सबसे खतरनाक सलाह देते हैं वह बच्चों से कहते हैं कि "स्कूल जाओ, अच्छे नंबर लाओ और कोई सुरक्षित नौकरी ढूंढ लो" अभिभावकों की यह सलाह बच्चों के भविष्य को पतन की ओर ले जाती है | एकमात्र जैनधर्म ही ऐसा धर्म है जिसके ग्रंथों का अध्ययन करने से व्यक्ति का पतन नहीं उत्थान होता है, यह धर्म हमें टेंशन फ्री जीवन प्रदान करता है, इसीलिए हमारे धर्म की शिक्षा प्रदान करने के लिए "क्षुल्लक श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी" ने जगह-जगह पर पाठशालाओं का निर्माण करवाया था, अब हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम उन पाठशालाओं का पुनरोद्धार करवाये और कम से कम पांच बच्चों को तो पाठशाला में जाने के लिए प्रेरित करें, आप स्वयं भी पाठशाला में अध्ययन-अध्यापन करने का प्रयास करें, क्योंकि हमारे धर्म में स्वाध्याय को परमतप कहा है, स्वाध्याय के पांच प्रकारों में एक आम्नाय नामक स्वाध्याय है जिसका अर्थ होता है बारंबार अध्ययन करना | पाठशाला भी बारंबार अध्ययन करवाती है, इसलिए उसे पाठशाला कहा जाता है | ऐसी पाठशाला जिससे हमारे दो-दो उद्देश्यों (आत्मानुभूति और तत्वप्रचार) की पूर्ति होती है तथा अन्य जन भी तत्वप्रचार के माध्यम से इसी मार्ग में लगते हैं, अतः हमें वर्तमान में संचालित पाठशालाओं को जिनशासन की प्रभावना हेतु सुचारू और सारगर्भित रूप से चलाना चाहिए.....

✍✍✍ अर्पित जैन शास्त्री,
पता:- बस स्टैंड के पास, भगवां,
जिला:- छतरपुर (म.प्र.)
मो.नं. :- 8103067640
व्हाट्सएप नं. :- 7597544339